

संस्कृत साहित्य और साहित्यानुवाद का स्वरूप एवं परंपराएं

डॉ. गोविन्द कुमार धारीवाल

सहायक अध्यापक

रा. इ. का. धोपडधार, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

मोबाइल- 9536352124

ईमेल- drkgdhariwal@gmail.com

सारांश

आधुनिक युग में अनुवाद ने साहित्यिक कृतियों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर परिवर्तन किया है, जिससे साहित्य आम जन के लिए अधिक सुलभ हो गया है। भारत में अनुवाद का इतिहास वैदिक साहित्य से संबद्ध प्राचीन काल से विद्यमान है। वर्तमान में, संस्कृत साहित्य के समस्त ग्रंथों का विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है, जिसने संस्कृत भाषा की विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ किया है।

प्राचीन काल की समृद्ध भाषा, संस्कृत, ने ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष और दर्शन जैसे विविध क्षेत्रों को गहन रूप से प्रभावित किया है। 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य अनुवादकों द्वारा विभिन्न ग्रंथों का अनुवाद किया गया है, जो वर्तमान युग को अनुवाद का युग सिद्ध करता है। इन अनुवादित ग्रंथों में गीता, महाभारत, छंद कवि, कुलपति मिश्र, विष्णु पुराण, परम दास, भगवानदास निरंजनी, पंचतंत्र, हितोपदेश, नारद नीति, देवीदास व्यास, चाणक्य नीति, विदुर नीति, राजनीति भाषा, स्वरोदय भाषा भाष्य, ताजिसर भाषा और शिग्र बोध भाष्य प्रमुख हैं।

काव्य का अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है जिसके लिए स्रोत भाषा का गहन ज्ञान अपेक्षित है। इसमें कविता की भाषा, प्रतीक, रूप, वाक्य-विन्यास, लय, संगीत, छन्द और बिम्ब सम्मिलित हैं। अनुवादकों के लिए यह आवश्यक है कि वे स्वयं कवि हों अथवा काव्य-शास्त्र का गहन ज्ञान रखते हों। शाब्दिक अनुवाद प्रायः अपर्याप्त होता है; प्रायः भावानुवाद अथवा नवीन रचना की आवश्यकता होती है। आचार्य भरत मुनि द्वारा स्थापित नाट्यशास्त्र का अनुवाद सर्वाधिक जटिल माना जाता है। अनुवादकों को रस और अभिनय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जो नाटक के आधारभूत तत्त्व हैं। कहानियों और उपन्यासों का अनुवाद अनुवादकों द्वारा नियमित रूप से किया जाता है, जिसमें पाठक और अनुवादक दोनों ही रुचि प्रदर्शित करते हैं।

विस्तृत विवरण

वर्तमान युग अनुवाद का युग है यह कहने में कोई संकोच नहीं है क्योंकि समूचा विश्व आज साहित्य अनुवाद के माध्यम से छोटा हो गया है। प्रत्येक साहित्य को अनूदित करके आम जन की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध हो गया है। यह साहित्य ज्ञानवर्धक हो रहा है। अनुवाद का आरंभ आवश्यकता से हुआ है क्योंकि पाठकों की नियमित मांग के आधार पर एक भाषा साहित्य को दूसरी भाषा में अनूदित किया जाता है। भारत में अनुवाद का इतिहास प्राचीन काल से रहा है। परंतु आज के अनुवाद में और प्राचीन काल के अनुवाद में बहुत अंतर है या कहें कि प्राचीन काल का अनुवाद, अनुवाद नहीं था क्योंकि प्राचीन भारतीय साहित्य में कहीं भी अनूदित साहित्य नहीं मिलता और न ही कोई अनुवाद की विधा। प्राचीन भारतीय साहित्य में अनुवाद का न मिलना एवं किसी भी विधा का अनूदित न होना।

डॉ भोलानाथ तिवारी ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि "उस काल में साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत सबसे आगे था। भारतीय साहित्यकारों ने जो कुछ बाहर से सीखा समझा उसे आत्मसात करके अपने शब्दों में अपने ढंग से व्यक्त किया जिसे अनुवाद नहीं कह सकते। हो सकता है कि कुछ अनुवाद हुए हो लेकिन कालचक्र ने उन्हें ढोना अनावश्यक समझा।" १ भारतीय प्राचीन साहित्य में कहीं अनुवाद का होना नहीं प्राप्त होता क्योंकि समकालीन विद्वानों एवं ऋषियों ने अपने बुद्धि ज्ञान भंडार के माध्यम से ही ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। परंतु यदि प्राप्त भी होता है तो वह केवल आधुनिक युग के अनुवाद से शायद भिन्न ही प्राप्त होता है।

डॉ रामगोपाल सिंह के अनुसार प्राचीन भारतीय साहित्य में अनुवाद शब्द का प्रयोग प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है और अनुवाद के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि "लेकिन यह पुनः कथन, पश्चात कथन, दुहराना, कहना, आवृत्ति, गुरु की बात का शिष्य द्वारा दोहराया जाना, सार्थक आवृत्ति, विधि या विहित का पुनः कथन आदि अर्थों में ही देखने को मिलता है, अनुवाद के आज के 'ट्रांसलेशन' के संदर्भ में कहीं भी देखने को नहीं मिलता है। संस्कृत के 'अनुवाद' शब्द को 'ट्रांसलेशन' अर्थ वाले आज के 'अनुवाद' शब्द से अर्थ के स्तर पर कोई सरोकार नहीं है।" २

भारतीय प्राचीन साहित्य का आधार वैदिक साहित्य को माना जाता है। वैदिक साहित्य में चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत साहित्य के ज्ञानवर्धक ग्रंथ हैं। अपने ज्ञान के भंडार के कारण आज वैदिक साहित्य विश्व में प्रकाश का पुंज बन गया है। समकालीन साहित्य में अन्य विद्वानों ने अनुवाद नहीं किया परंतु वर्तमान समय में वैदिक साहित्य का संपूर्ण अनुवाद भिन्न-भिन्न भाषाओं में किया गया। जिस कारण संस्कृत भाषा को अपनी पहचान प्राप्त हुई। संपूर्ण संसार ने संस्कृत साहित्य के महत्व को समझा। "डॉ रामगोपाल सिंह के अनुसार प्राचीन संस्कृत भाषा में ही नहीं बल्कि पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा में भी न तो अनूदित साहित्य ही देखने को मिलता है और न ही अनुवाद विधा। अपभ्रंश साहित्य इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उसमें जो कुछ भी संचित ज्ञान है वह मौलिक है।" ३

प्राचीन भारतीय साहित्य में संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि भाषाओं से विदेशी भाषाओं में खूब अनुवाद हुआ। परंतु विदेशी भाषाओं से भारतीय भाषा में किसी प्रकार का कोई अनुवाद नहीं हुआ अर्थात् भारतीय संस्कृत भाषा ज्ञानवर्धक भाषा रही होगी जिस कारण सभी भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में पाठकों की आवश्यकतानुसार अनुवाद किया गया। विदेशी भाषा में शायद कुछ कमी आ रही होगी जिस कारण संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा में किसी विदेशी भाषाओं का कोई अनुवाद नहीं हुआ। "डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार प्राकृत अपभ्रंश में पूरी की पूरी कोई अनूदित रचना तो कदाचित नहीं मिलती परंतु संस्कृत की 'बाल्मीकि रामायण', 'मेघदूत', 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' आदि कुछ रचनाओं की कुछ पंक्तियों या छंदों के छाया अनुवाद 'महावीर चरिउ', 'पउम चरिउ', 'भविष्यत कहा', 'सुदंसण चरिउ' आदि अपभ्रंश, प्राकृत-अपभ्रंश की कृतियों में मिल जाते हैं।" ४ समकालीन साहित्य में ग्रंथों का अनुवाद पूरा का पूरा तो नहीं हुआ परंतु कुछ विद्वानों ने इन ग्रंथों की सूक्तियों या कुछ पंक्तियों को आधार मानकर अपने ग्रंथों में स्थान दिया है।

आज संस्कृत साहित्य के सभी ग्रंथों का भारतीय अन्य भाषाओं में एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अनेक विद्वानों ने निम्न भाषाओं में इन सभी ग्रंथों का अनुवाद किया एवं भारतीय ज्ञान भंडार को समुचित विश्व के सामने रखा। महाकवि कालिदास आज विश्व में 'विश्वगुरु' की उपाधि से विभूषित है। इसका प्रसिद्धि का सबसे बड़ा कारण निम्न भाषाओं में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का अनुवाद ही रहा अन्यथा कालिदास की अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक एवं मेघदूत, ऋतुसंहार आदि काव्य से विश्व जगत् अनभिज्ञ रहता।

प्राचीन काल में संस्कृत भाषा समृद्ध भाषा थी। इसका प्रभाव हमें ज्ञान, विज्ञान आदि क्षेत्र में दिखाई देता है। संस्कृत भाषा इतनी समृद्ध थी कि अन्य विदेशी भाषाओं से कुछ भी ग्रहण करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी। परंतु अधिकांश विदेशी भाषाओं ने संस्कृत साहित्य में संचित ज्ञान भंडार को अपनी भाषा में अनुवाद किया गया है। संस्कृत साहित्य ज्ञानवर्धक के साथ-साथ प्राण रक्षक सभी सिद्धांतों का विशाल सागर दिखाई देता है। सुश्रुत एवं चरक आदि आयुर्वेदाचार्य ने चिकित्सा के क्षेत्र में संस्कृत भाषा के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। वैदिक काल में संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जाता था। परंतु आधुनिक युग के आते-आते संस्कृत अपना स्वरूप खोज चुकी है। संस्कृत के प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान मोनियर विलियम्स ने कहा था "यद्यपि भारत में पांच सौ से अधिक बोलियां प्रचलित हैं परंतु हिंदुत्व को मानने वाले सभी व्यक्तियों के लिए चाहे वे किसी भी जाति, कुल, मर्यादा, संप्रदाय या बोलियों की भिन्नताओं के क्यों न हो, सर्वसम्मति से स्वीकृत एवं समादृत एक ही पवित्र भाषा और साहित्य है। वह भाषा है संस्कृत और साहित्य हैं संस्कृत साहित्य।" ५

संस्कृत साहित्य एवं साहित्य अनुवाद की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए अनेक विद्वानों ने अपने अपने विचार दिए। सभी के विचारों का एक ही भावार्थ स्पष्ट होता है कि जो किसी एक भाषा का दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों कहना अनुवाद कहलाता है। डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार "अनुवाद वह भाषायी प्रक्रिया है जिसके मूल में एक भाषिक संरचना या अभिव्यक्ति का दूसरी भाषा संरचना या अभिव्यक्ति में रूपांतरण होता है। उन्होंने इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है कि एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों कहना अनुवाद है।" ६

संस्कृत साहित्य के अनुवाद ग्रंथों की सूची बहुत लंबी है। सूची लंबी होने के अनन्य कारण है। संस्कृत साहित्य ज्ञानवर्धक साहित्य हैं चाहे वह ऋग्वेद साहित्य हो या पंच तंत्र साहित्य हो। साहित्य के सभी क्षेत्र धार्मिक साहित्य, आयुर्विज्ञान, ज्योतिष, कल्प, व्याकरण, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, पंचतंत्र, हितोपदेश, नीतिशतक आदि ग्रंथों का अनुवाद भारतीय भाषाएं तथा विदेशी भाषाओं में प्रचुर मात्रा से किया गया। 16 सदी से लेकर 18 सदी तक यह कार्य निरंतर चलता रहा वर्तमान युग तो अनुवाद का युग है। यह कहने में कोई संशय नहीं है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद विज्ञान' में संस्कृत साहित्य के सभी अनूदित ग्रंथों की सूची इस प्रकार बताई है कि- "गीता का अनुवाद- हरि बल्लभ से 1640 ईस्वी गीतावर्तिक (गद्यानुवाद), भगवानदास ने 1699 ई० गीता भाषा टीका (दोहों में अनुवाद तथा गद्य में टीका), आनंदराम ने 1704 ई० गीता भाषा ज्ञान आदि में अनुवादकों ने गीता का अनुवाद किया। महाभारत का अनुवाद- देवीदास ने 1663 ई० में महाभारत, छंद कवि ने विजय मुक्तावली (अंशानुवाद), कुलपति मिश्र ने 1727 ई० में संग्राम सार (वनपर्व पद्यानुवाद) आदि में अनुवादकों ने किया। पुराण का अनुवाद- विष्णु पुराण लखन राज ने 1580 ईस्वी में विष्णु पुराण, परम दास ने 1582 ई० में जैमिनी, भगवानदास निरंजनी ने 1698 ई० में जैमिनी अश्वमेध (दोहा - चौपाई में मुक्कतानुवाद), आदि में अनुवादकों ने किया। पंचतंत्र का अनुवाद- देवीलाल ने 1690 ई० में पंचतंत्र भाषा टीका, अमर सिंह ने 1703 ईस्वी में पंचतंत्र उल्था, कृष्ण भट्ट ने 1725 ई० में पंचतंत्र भाषा आदि में अनुवादकों ने अनुवाद किया। हितोपदेश का अनुवाद- पदुमनदास ने 1681 ई० में हितोपदेश, वंशीधर ने 1717 ई० में मित्र मनोहर पद्यानुवाद, हितोपदेश कथा पद्यानुवाद जय सिंह दास ने 1725 ई० में हितोपदेश कथा पद्यानुवाद आदि अनुवादकों ने अनुवाद किया। अन्य नीति ग्रंथों का अनुवाद- नारद नीति (सभा पर्व के एक अध्याय का हिंदी रूपांतरण गद्य में), देवीदास व्यास ने 1643 ई० में, चाणक्य नीति (पद्यानुवाद) भवानी दास 1680 में, विदुर नीति (उद्योग पर्व का पद्यानुवाद) गोपाल ने 1690ई० में, राजनीति भाषा

(चाणक्य नीति का पद्यानुवाद) कृतिसेन 1780 ई० आदि में अनुवादकों ने अनुवाद किया। ज्योतिष के क्षेत्र में स्वरोदय भाषा टीका लालचंद ने 1696 ई० में, ताजीसार भाषा छाजु राम द्विवेदी ने 1735 ईस्वी में, शीघ्र बोध टीका गुलाब दास ने 1745 ई० में अनुवादकों ने अनुवाद किया।^७

संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं का अनुवाद करने के साथ-साथ नीति काव्य का अनुवाद अधिक मात्रा में किया गया, क्योंकि संस्कृत में चाणक्य नीति, विदुर नीति, शुक्र नीति, भृत्हरि के तीनों शतक- नीति शतक, श्रृंगार शतक, वैराग्य शतक, हितोपदेश, पंचतंत्र आदि सर्वश्रेष्ठ ज्ञानवर्धक कहानियों का अनुवाद भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी किया गया। संस्कृत साहित्य का ओर अधिक अनुवाद नाटक विधाओं में किया गया। संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटक में ज्ञान-विज्ञान का सागर विद्यमान है। इसलिए आधुनिक काल में संस्कृत के सभी नाटकों का अनुवाद पाठकों को ज्ञान वर्धन करने के लिए किया जा रहा है। "संस्कृत में रचित नाटकों का हिंदी अनुवाद आदिकाल में दिखाई देता है। सबसे पहली अनूदित रचना 1544 ईस्वी में की गई थी। यह रचना संस्कृत 'प्रबोध चंद्रोदय' का संस्कृत हिंदी अनुवाद है, जो मल्ह कवि द्वारा किया हुआ है।"^८ संस्कृत साहित्य के अनेक नाटकों का अनुवाद भी किया गया।

कृष्ण मिश्र रचित प्रबोध चंद्रोदय, कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीय, भवभूति द्वारा रचित उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम्, और मालती-माधव भास द्वारा रचित स्वप्नवासदत्तम्, प्रतिज्ञायोगन्धरायणम्, कर्णभारम्, उरुभंगम्, अविभारकम्, प्रतिमानाटकम्, अभिषेकनाटकम्, मध्यमव्यायोगम्, दूतवाक्यम्, दूतघटोत्कचम्, पंचरात्रम्, चारूदत्तम् आदि विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षसम्, शुद्रक द्वारा रचित मृच्छकटिकम्, श्रीहर्ष द्वारा रचित नाटिका रत्नावली एवं भट्ट नारायण द्वारा रचित वेणीसंहारम् आदि नाटकों का हिंदी में अनुवाद करने की अधिकांश साहित्यकारों ने अत्यधिक रुचि दिखाई क्योंकि यह साहित्य ज्ञानवर्धक साहित्य हैं। अनुवाद उसी का किया जाता है जिसकी आवश्यकता समाज को हो। समाज एवं पाठकों की पूर्ति के लिए एक भाषा से दूसरी भाषा में साहित्य अनुवाद किया जाता रहा है।

सर्वप्रथम संस्कृत नाटकों में प्रेस की स्थापना होने के पश्चात कालिदास द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का अनुवाद किया गया। तत्पश्चात पाठकों के अनुग्रह पर अनुवादकों ने अन्य संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया। भारतीय साहित्य ज्ञान का भंडार है। इसको जितना पढ़ा जाए उतना ही कम है। भारतीय साहित्य ने कभी विदेशी साहित्य को अनूदित नहीं किया है, क्योंकि प्राचीन वैदिक साहित्य में प्रचुर मात्रा में ज्ञान का भंडार होने के कारण आज आधुनिक युग विश्वगुरु कहता है और भारतीय साहित्य को सबसे प्राचीन साहित्य भी मानता है। "हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में जब प्रेस के स्थापना हुई तब अनेक हिंदी लेखकों ने संस्कृत नाटकों से प्रभावित होकर नाटकानुवाद किया। राजा लक्ष्मण सिंह ने 1863 ईस्वी में 'महाकवि कालिदास' की विश्व प्रसिद्ध कृति 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का 'शकुंतला नाटक' नाम से अनुवाद किया।"^९ नाटकानुवाद की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए अनेक अनुवादकों ने संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया। "भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1868 ईस्वी में श्री हर्ष द्वारा रचित नाटिका 'रत्नावली' का अनुवाद किया। 1872 ईस्वी में उन्होंने कृष्ण मिश्र विरचित 'प्रबोध चंद्रोदय' के तीसरे अंक का अनुवाद 'पाखंड विडंबन' नाम से किया। 1873 ई० में कांचन कवि द्वारा रचित 'व्यायोग' का अनुवाद 'धनंजय विजय' नाम से किया। 1875 ई० में राजशेखर कवि द्वारा रचित सट्टक (प्राकृत भाषा में) का अनुवाद 'कपूर मंजरी' नाम से किया। 1878 ई० में विशाखदत्त रचित नाटक 'मुद्राराक्षसम्' का हिंदी अनुवाद किया।"^{१०}

एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करना जटिल प्रक्रिया है। अनुवादक को उस भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए जिसका वह अनुवाद करने जा रहा है। साहित्य की विभिन्न विधाओं का अनुवाद किया जाता है परंतु काव्य विधा का अनुवाद अन्य विधाओं से कठिन है। इसमें कविता की भाषा प्रतीक, रूप, श्लेष, लय, संगीत, छंद, बिंब आदि सब कुछ आते हैं। काव्यानुवाद पूर्णतः पुनः सर्जन की प्रक्रिया है। कविताओं के अनुवाद के लिए पुनः सर्जन के लिए मूल के सर्जन की मूलभूमि को पढ़ना आवश्यक होता है। इसके लिए अनुवादक को मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है। यह काम इतना सरल नहीं है कि मूल कवि की भावनाओं एवं संवेदनाओं को समझा जा सके। जो अनुवादक स्वयं या तो कवि हो या कम से कम कविता का ज्ञान रखता हो। अनुवाद में कभी शब्दानुवाद से काम नहीं चलता, प्रायः भावानुवाद भी या नवीन सर्जन आवश्यक होता है। अनुवादक को कविता अनुवाद करने के लिए अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कभी अनुवाद में अलंकारों का अनुवाद एवं उनका सौंदर्य बताना अनुवादकों के लिए दुष्कर कार्य होता है। काव्यानुवाद असंभव है।

विश्व में अनेक श्रेष्ठ काव्यों के अनुवाद हो रहे हैं और होते रहेंगे। काव्यानुवाद पूर्णतः पुनः सर्जन की प्रक्रिया है। "काव्य का अनुवाद प्रतिभा की परीक्षा है। काव्य का अनुवाद तो सफल कवि ही कर सकता है। कवि हृदय ही काव्य के मर्म एवं भाव सौंदर्य का हृदयंगम कर सार्थक अनुवाद कर सकता है। काव्य में रूप, रस, स्पर्श, गंध और ध्वनि के मूर्त और अमूर्त बिंब होते हैं। कहीं दो भाषाओं में बिंबों की समानता कठिन होती है। परंतु अनुवादक स्रोत भाषा के बिंब विधान को दृष्टि में रखकर लक्ष्य भाषा में समान बिंब खोजने का प्रयास करें तो काव्य का भी सफल अनुवाद किया जा सकता है।" ११ काव्य एक ऐसी संरचना है जिसे एक भाषा से दूसरी भाषा में कहने पर उसका सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

काव्यानुवाद करते समय मूल पाठ के कुछ प्रभावात्मक तत्व छूट जाते हैं और कुछ नए तत्व उसमें जुड़ जाते हैं। अनुवादक के लिए छूटे हुए तत्व का अनुवाद संभव नहीं होता इसलिए नए जुड़े हुए तत्वों का अनुवाद अपनी बुद्धि के आधार पर सर्जन कर देता है। नए तत्व के समावेश होने पर अनुवाद सजीव हो जाता है परंतु अपने मूल पाठ को छोड़कर नए सर्जन का निर्माण कर देता है। काव्य अनुवाद किसी चुनौती से कम नहीं विश्व भर में अनेक विद्वानों द्वारा दिन-प्रतिदिन काव्यानुवाद होते आ रहे हैं और ऐसे ही भविष्य में होते रहेंगे।

काव्यानुवाद के बाद कठिन अनुवाद नाटकानुवाद का होता है। नाट्य के प्रवर्तक आचार्य भरत मुनि माने जाते हैं। नाटक का मूल तत्व रस होता है तथा नाटक में रस और अभिनय दोनों का अपना महत्वपूर्ण स्थान होता है। परंतु अनुवादक एक भाषा से दूसरी भाषा में जब वह अनुवाद करता है तो नाटक के रस और अभिनय दोनों के मूल तत्व पर आवश्यक रूप से कोई न कोई प्रभाव जरूर पड़ता है। मूल कवि के रस भाव को समझना अनुवादकों के लिए दुष्कर साबित होता है। रस को साहित्य की आत्मा भी कहा जाता है इसलिए आत्मा का अनुवाद करना अनुवादकों के लिए कठिन कार्य है। जिस प्रकार काव्यानुवाद में असंख्य कठिनाइयां आती हैं उसी प्रकार नाटक भी इनसे दूर नहीं है।

नाटक का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को रस एवं अभिनय का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। यही दो तत्व ऐसे हैं जो नाटक का आधार एवं मूल संरचना है। "नाटक के अनुवाद के लिए सबसे अधिक आवश्यक शर्त यह है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए। मूल नाटक की मंच परंपरा को जाने बिना अनुवादक नाटक के प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड़ पाएगा तथा लक्ष्य भाषा की रंगोचित दृष्टि से नहीं उतार पाएगा। उसे मूल की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि-संयोजन आदि के प्रति संवेदनशील होकर मूल को समझना होगा तथा लक्ष्य भाषा की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि के अनुकूल नाटक को रूपायित करना होगा मात्र

भाषा रूपांतरित नहीं।" १२ कथा अनुवाद करना अनुवादक के लिए काफी सरल अनुवाद है एवं नाटकानुवाद से सरल होता है। सर्जनात्मक साहित्य में सर्वाधिक सांस्कृतिक तत्व कथा साहित्य में ही होते हैं।

वर्तमान में कहानी और उपन्यास आदि का अनुवाद अनुवादकों द्वारा दिन-प्रतिदिन हो रहा है। पाठकों एवं अनुवादकों ने पढ़ने तथा अनुवाद करने में रुचि दिखाई है। साहित्य अनुवाद करने के लिए बिंब, अलंकार, छंद आदि का ज्ञान अनुवादकों के लिए आवश्यक है। अलंकार काव्य का सौंदर्य इसलिए नहीं कहा जाता कि वह पाठकों के मन में सौंदर्य का पुंज प्रकाशवान करें। छंद का आधार लय होता है जो मात्रा वर्णों के शुरुआत में सम, विषम योजनाओं पर निर्भर होता है। छंद को साहित्य के वस्त्र कहा जाते हैं इसी से काव्य की सुंदरता बढ़ती है। अनुवाद साहित्य सर्जन के क्षेत्र में एक जटिल प्रक्रिया है। अनुवादकों को अनुवाद करने के लिए सबसे पहले उस भाषा के मूल तत्व का ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि इसके बिना वह मूल कवि के हृदय की भावना एवं रस की अनुभूति नहीं की जा सकती। रस के बिना कोई भी काव्य अधूरा माना जाता है। रस एवं श्रंगार काव्य प्रसिद्धि में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ सूची-

1. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ संख्या- 203
2. अनुवाद विज्ञान, स्वरूप और समस्याएं, डॉ. रामगोपाल सिंह, पृष्ठ संख्या- 244
3. अनुवाद विज्ञान स्वरूप और समस्याएं, डॉ. रामगोपाल सिंह, पृष्ठ संख्या- 245
4. अनुवाद विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ संख्या- 205
5. अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृष्ठ संख्या- 1,3
6. अनुवाद बोध, संपादक डॉ. गार्गी गुप्त, लेखक डॉ नारायण दत्त पालीवाल, पृष्ठ संख्या- 180
7. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ संख्या- 209
8. संस्कृत नाटकों में हिंदी अनुवाद, देवेन्द्र कुमार, पृष्ठ संख्या- 97
9. हिंदी साहित्य कोश भाग- 02, पृष्ठ संख्या- 32
10. अनुवाद पत्रिका, अंक 1996-97 जुलाई-दिसंबर 1998, पृष्ठ संख्या- 20
11. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, जी. गोपी नायन, पृष्ठ संख्या- 96
12. अनुवाद विज्ञान, डॉ भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ संख्या- 123